National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(56): 251-254
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. सोनाली मुखार्जी,
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,
सेवा भारती महाविद्यालय

Correspondence:
डॉ. सोनाली मुखार्जी,
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,
सेवा भारती महाविद्यालय

मृच्छकटिक मे गणिका वसन्तसेना की हाशियाकरण से सामाजिक समावेशन की एक यात्रा

डॉ. सोनाली मुखार्जी

मुख्य शब्द: गणिका, मदनिका, वसन्तसेना, चारुदत्त, वधू, स्वर्णालंकार

भूमिका

महाकवि शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिक दस अंकों का एक उत्कृष्ट प्रकरण है। इस प्रकरण में शूद्रक ने केवल राजदरबार अथवा अभिजात वर्ग का ही चित्रण नहीं किया है, अपितु समाज के निम्नवर्गीय एवं उपेक्षित जनसमुदाय के जीवन को भी अत्यन्त यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया है। राजकीय जीवन और सामान्य जनजीवन का समानांतर चित्रण मृच्छकटिक की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। कालिदास, बाणभट्ट तथा भवभूति जैसे कवियों की भावप्रधान एवं सौन्दर्यपरक काव्यपरम्परा से भिन्न, शूद्रक का यह प्रकरण कठोर सामाजिक व्यवस्था पर आधारित है। इसमें चोर, जुआरी, भिक्षुक, दुष्टजन, गणिका तथा उनके सहचरों जैसे विविध सामाजिक वर्गों का जीवन अत्यन्त स्वाभाविक रूप में चित्रित हुआ है। नाटककार ने भाग्य अथवा दैवी हस्तक्षेप की अपेक्षा मानव-पुरुषार्थ, सामाजिक यथार्थ तथा मानवीय मूल्यों को अधिक महत्त्व प्रदान किया है।

भरतमुनि के अनुसार —

"यत्र कविरात्मशक्त्या वस्तु शरीरं च नायकं चैव।
औत्पत्तिकं प्रकुरुते प्रकरणमेतद् बुधैर्ज्ञेयम्।।" (नाट्यशास्त्र २०.४८)

अर्थात् जब कवि अपनी मौलिक कल्पना से कथा, पात्र तथा नायक का सृजन करता है, तब उस नाट्यरचना को प्रकरण कहा जाता है। प्रकरण के दो भेद माने गए हैं — शुद्ध तथा संकीर्ण। धनञ्जय ने दशरूपक में प्रकरण की नायिका के सम्बन्ध में कहा है —

"नायिका तु द्वेधा नेतुः कुलस्त्री गणिका तथा।
क्वचिदेकैव कुलजा वेश्या क्वापि द्वयं क्वचित्॥
कुलजाभ्यन्तरा वाह्या वेश्या नातिक्रमोऽनयोः।
आभिः प्रकरणं त्रेधा संकीर्णं धूर्तसंकुलम्॥" (दशरूपक ३.४१-४२)

अर्थात् प्रकरण की नायिका कुलवधू अथवा गणिका — दोनों में से कोई भी हो सकती है। मृच्छकटिक में धूता कुलवधू तथा वसन्तसेना गणिका के रूप में उपस्थित हैं। यद्यपि नाट्यशास्त्र में कुलस्त्री और गणिका के प्रत्यक्ष मिलन को सामान्यतः वर्जित माना गया है, तथापि शूद्रक ने इस परम्परा का अनुसरण न करते हुए दोनों पात्रों का परस्पर आलिंगन भी चित्रित किया है। इससे स्पष्ट होता है कि शूद्रक ने शास्त्रीय परम्परा का यांत्रिक अनुकरण न कर स्वतंत्र एवं मौलिक दृष्टिकोण अपनाया।

साहित्यशास्त्र के अनुसार प्रकरण की कथा लौकिक तथा कवि-कल्पित होती है; वह इतिहास अथवा पुराण पर आधारित न होकर लोकजीवन से प्रेरित होती है। मृच्छकटिक भी इसी परम्परा का प्रतिनिधि नाटक है। इसका मुख्य कथानक ब्राह्मण चारुदत्त और गणिका वसन्तसेना के प्रेम पर आधारित है।

गणिका होते हुए भी वसन्तसेना का प्रेम निष्कपट, निस्वार्थ एवं मानवीय मूल्यों से अनुप्राणित है। इसी कारण नाटक के अंत में उसे केवल प्रेमिका के रूप में नहीं, बल्कि वधू के सामाजिक सम्मान से भी विभूषित किया जाता है। यह प्रसंग सामाजिक समावेशन, मानवीय गरिमा तथा रूढ़ सामाजिक मान्यताओं के अतिक्रमण का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

विषय - विन्यास

साहित्यशास्त्रियों के अनुसार प्रकरण की कथा लौकिक तथा कवि - कल्पित होती है। यह इतिहास अथवा पुराण की प्रसिद्ध कथाओं पर आधारित न होकर लोकजीवन में प्रचलित कथाओं से प्रेरणा ग्रहण करती है। इस दृष्टि से मृच्छकटिक शूद्रक की मौलिक रचनात्मक प्रतिभा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

इस प्रकरण का प्रधान कथानक ब्राह्मण चारुदत्त और गणिका वसन्तसेना के प्रेम पर केन्द्रित है। यद्यपि वसन्तसेना एक गणिका है, तथापि उसका प्रेम वासनापरक नहीं, अपितु निःस्वार्थ, समर्पित एवं आदर्श मानवीय प्रेम का प्रतीक है। इसी कारण नाटक के अंत में उसे केवल प्रेमिका के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से सम्मानित वधू का स्थान प्राप्त होता है। आरम्भ से ही इस प्रेम की यात्रा संघर्षपूर्ण है। एक ओर निर्धन किंतु उच्चचरित्र ब्राह्मण चारुदत्त हैं, जो अपनी मर्यादा और संकोच के कारण अपने प्रेम की स्पष्ट अभिव्यक्ति नहीं कर पाते; दूसरी ओर राजपरिवार से सम्बद्ध शकार है, जो धन, शक्ति और अधिकार के बल पर वसन्तसेना को प्राप्त करना चाहता है। शकार का अहंकार, छल और अनैतिक आचरण इस प्रेम के मार्ग में निरन्तर बाधा उत्पन्न करता है। इन प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच वसन्तसेना भौतिक ऐश्वर्य, विलासिता और लोभ का परित्याग कर प्रेम, करुणा तथा मानवीय संवेदना का मार्ग चुनती है। अनेक संकटों और प्राणघातक परिस्थितियों का सामना करते हुए भी वह चारुदत्त की रक्षा करती है तथा अपने प्रेम की पवित्रता को अक्षुण्ण रखती है। इस प्रकार वह केवल एक गणिका नहीं, बल्कि त्याग, साहस और नैतिक आदर्श की प्रतिमूर्ति बनकर उभरती है। चारुदत्त के प्रति उसके प्रेम की अभिव्यक्ति निम्नलिखित संस्कृत वचन में परिलक्षित होती है —

"गुणः खल्वनुरागस्य कारणम्।" (मृच्छकटिक. पृ. ११५)

अर्थात् सच्चा प्रेम बाह्य ऐश्वर्य या रूप से नहीं, बल्कि व्यक्ति के गुणों से उत्पन्न होता है।

गणिका के रूप में वसन्तसेना का चरित्र

वसन्तसेना उज्जयिनी की एक अत्यन्त सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित गणिका है। वह अपार धन-संपत्ति की स्वामिनी है और नगर के अभिजात क्षेत्र में स्थित एक भव्य प्रासाद में निवास करती है। उसके सौन्दर्य की तुलना वसन्त ऋतु की शोभा से की गई है —

"गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना।"

(मृच्छकटिक. पृ. ११५)

किन्तु उसकी वास्तविक महानता उसके सौन्दर्य या वैभव में नहीं, बल्कि उसके उदात्त चरित्र में निहित है। वह धनलोलुप नहीं है। जब शकार उसे बहुमूल्य आभूषणों का प्रलोभन देकर अपने अधिकार में करना चाहता है, तब वह बिना किसी संकोच के उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। इससे स्पष्ट होता है कि उसके लिए धन की अपेक्षा आत्मसम्मान और प्रेम का मूल्य कहीं अधिक है। नाटक के प्रथम अंक में शकार, उसका सहचर विट तथा सेवक चेट वसन्तसेना का पीछा करते हैं और उसके गणिका होने के कारण अनेक अपमानजनक एवं अवमाननापूर्ण शब्दों का प्रयोग करते हैं। उसे कामासक्त, कुलनाशिनी, वेश्या तथा भोग-विलास की वस्तु कहकर संबोधित किया जाता है। विट भी यह कहकर उसका उपहास करता है कि गणिका सभी व्यक्तियों के प्रति समान व्यवहार करती है और उसका शरीर धन के बदले खरीदा जा सकता है। ये सभी टिप्पणियाँ तत्कालीन समाज में गणिकाओं के प्रति विद्यमान सामाजिक पूर्वाग्रह, घृणा तथा लैंगिक असमानता को स्पष्ट करती हैं। किन्तु शूद्रक वसन्तसेना के चरित्र के माध्यम से यह सिद्ध करते हैं कि किसी स्त्री का व्यवसाय उसके नैतिक चरित्र का मापदण्ड नहीं हो सकता। वसन्तसेना का जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि प्रेम, करुणा, त्याग, उदारता और मानवीय गरिमा किसी विशेष सामाजिक वर्ग की बपौती नहीं हैं।

शर्विलक – मदनिका प्रसंग और वसन्तसेना की कर्तव्यपरायणता

मृच्छकटिक के चतुर्थ अंक में शर्विलक और मदनिका का प्रसंग वसन्तसेना के चरित्र के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पक्ष को उद्घाटित करता है। शर्विलक, जो मदनिका से प्रेम करता है, प्रारम्भ में गणिका - समाज के प्रति अत्यन्त कठोर एवं तिरस्कारपूर्ण दृष्टिकोण व्यक्त करता है। उसके अनुसार गणिकाएँ धनाढ्य व्यक्तियों का धन नष्ट कर उन्हें निर्धन बना देती हैं। वह उनकी तुलना ऐसे पक्षियों से करता है जो फलयुक्त वृक्षों को उजाड़ देते हैं। इसी प्रकार वह यह भी कहता है कि गणिकाओं का हृदय समुद्र की लहरों की तर्हा चंचल होता है तथा वो स्वार्थ की पूर्ति के बाद पुरुषों का परित्याग कर देती हैं। किन्तु शूद्रक इस पूर्वाग्रह को सत्य सिद्ध नहीं करते। इसके विपरीत, कथा के विकास में स्वयं शर्विलक का आचरण उसके कथनों का खण्डन करता है। मदनिका को मुक्त कराने के उद्देश्य से वह चारुदत्त के घर से वसन्तसेना के स्वर्णाभूषणों की चोरी करता है। जब मदनिका को इस चोरी का ज्ञान होता है, तब वह चोरी के आभूषणों को लौटाने का परामर्श देती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह लोभ या अनैतिकता का समर्थन नहीं करती। वसन्तसेना इस सम्पूर्ण घटना को जानकर भी न तो क्रोधित होती है और न ही प्रतिशोध का मार्ग अपनाती है। इसके विपरीत, वह मदनिका और शर्विलक के प्रेम का सम्मान करती है तथा बिना किसी मूल्य के मदनिका को शर्विलक के साथ जाने की अनुमति देती है। इस प्रकार वह अपनी दासी को दासत्व से मुक्त कर उसके स्वतंत्र जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। यह प्रसंग वसन्तसेना की उदारता, सहानुभूति और मानवीय संवेदनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मदनिका के कथन से यह भी ज्ञात होता है कि यदि वसन्तसेना की पूर्ण स्वतंत्र इच्छा होती, तो वह अपने अधीन सभी दास-दासियों को भी मुक्त कर देती। इससे यह सिद्ध होता है कि वसन्तसेना केवल अपनी सहचरी के प्रति ही नहीं, बल्कि समस्त सेवक-वर्ग के प्रति भी करुणा और समानुभूति का भाव रखती है। यथा -

'यदि मम स्वच्छन्दः तदा विना अर्थं-
सर्वं परिजनम् अभुजिश्यं करिष्यामि।'

(मृच्छकटिक. पृ. २४८)

वसन्तसेना की महानुभावता

वसन्तसेना का उदार एवं परोपकारी स्वभाव नाटक के अनेक प्रसंगों में अभिव्यक्त हुआ है। चारुदत्त के पूर्व सेवक संवाहक पर जुए का ऋण चढ़ जाने के कारण उसे अत्यन्त कष्ट सहना पड़ता है। वसन्तसेना अपने स्वर्णाभूषण दान करके उसका सम्पूर्ण ऋण चुका देती है और उसे बन्धनमुक्त कर देती है। यह घटना उसके दानशील, करुणामय एवं लोकहितैषी व्यक्तित्व का परिचायक है।

चारुदत्त भी उसके इस उच्च चरित्र से प्रभावित होकर उसे देवी के समान पूजनीय मानता है। वसन्तसेना के प्रति उसका यह सम्मान केवल प्रेम का परिणाम नहीं, बल्कि उसके असाधारण नैतिक व्यक्तित्व की स्वीकृति है। जैसे –

'अये कथं देवतोपस्थानयोग्या युवतिरियम्।'

(मृच्छकटिक. पृ. १४७)

नाटक में वसन्तसेना के भव्य भवन का अत्यन्त आकर्षक वर्णन भी प्राप्त होता है। स्वर्णमय द्वार, रत्नजटित सीढ़ियाँ, मुक्तामालाओं से अलंकृत कक्ष तथा पुष्प - वाटिकाओं से युक्त उसका प्रासाद उसके वैभव का परिचायक है। तथापि शूद्रक यह स्पष्ट करते हैं कि बाह्य ऐश्वर्य उसके व्यक्तित्व का वास्तविक परिचय नहीं है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता उसकी मानवीय संवेदना, विनम्रता और निष्कलुष प्रेम है।

चारुदत्त के प्रति उसका प्रेम किसी प्रकार की भोग-लालसा पर आधारित नहीं है। वह उसे केवल एक प्रेमी के रूप में नहीं, बल्कि सद्गुण, मर्यादा और आदर्श मानवता के प्रतीक के रूप में स्वीकार करती है। यही कारण है कि वह समाज में सम्मानित गृहस्थ जीवन की आकांक्षा करती है और अपने चरित्र के माध्यम से यह सिद्ध करती है कि सच्ची महानता जन्म, व्यवसाय अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि व्यक्ति के आचरण, नैतिकता और मानवीय मूल्यों से निर्धारित होती है।

वसन्तसेना का मातृत्व

यद्यपि वसन्तसेना एक गणिका है, तथापि उसके व्यक्तित्व में मातृत्व की करुणा और वात्सल्य का अत्यन्त मनोहारी स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। चारुदत्त के बालक रोहसेन के प्रति उसका स्नेह इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। जब रोहसेन अपने पड़ोसी बालक की स्वर्णमयी खिलौना-गाड़ी देखकर वैसी ही गाड़ी की इच्छा व्यक्त करता है और उसकी माता उसके लिए केवल मिट्टी की गाड़ी बनवा पाती है, तब वसन्तसेना बालक की इच्छा पूर्ण करने के लिए अपने समस्त स्वर्णाभूषण अर्पित कर देती है। यह प्रसंग उसके निष्कपट वात्सल्य, उदारता तथा मातृसुलभ संवेदना का सशक्त प्रमाण है।

वसन्तसेना की काव्य - दृष्टि

वसन्तसेना केवल रूपवती और सम्पन्न स्त्री ही नहीं, अपितु संगीत, नृत्य तथा चित्रकला में भी निपुण है। उसके व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उसकी काव्य - संवेदना है। वर्षा ऋतु के आगमन पर वह प्रकृति का अत्यन्त रमणीय एवं काव्यमय चित्र प्रस्तुत करती है। उसके वर्णन में विद्युत् स्वर्णदीपों के समान आकाश को आलोकित करती है, मेघों का नर्तन, मयूरों का उल्लास, बलाकाओं की पंक्तियाँ तथा हंसों की चंचलता प्रकृति को जीवंत बना देती है। इस प्रकार शूद्रक वसन्तसेना को केवल गणिका के रूप में नहीं, बल्कि एक सुसंस्कृत, कलाप्रिय और संवेदनशील व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

वसन्तसेना की धर्मपरायणता

वसन्तसेना का चरित्र ईर्ष्या, स्वार्थ और अधिकार-बोध से सर्वथा रहित है। चारुदत्त की पत्नी धूता के प्रति उसका व्यवहार इसका सर्वोत्तम प्रमाण है। जब उसे ज्ञात होता है कि धूता अपने पति के अनिष्ट के समाचार से अत्यन्त व्यथित होकर आत्मोत्सर्ग का विचार कर रही है, तब वह तत्काल चारुदत्त से धूता के प्राणों की रक्षा करने का आग्रह करती है। इस प्रसंग में वसन्तसेना स्वयं को चारुदत्त और धूता — दोनों की सेविका के रूप में प्रस्तुत करती है। उसके इस व्यवहार में प्रतिद्वन्द्विता नहीं, अपितु करुणा, विनम्रता तथा धर्मनिष्ठा का परिचय मिलता है। नाटक के अंतिम भाग में धूता और वसन्तसेना का परस्पर आलिंगन सामाजिक समरसता, स्त्री-सम्मान और पारस्परिक विश्वास का अत्यन्त मार्मिक प्रतीक बन जाता है। धूता वसन्तसेना को स्नेहपूर्वक अपनी बहन कहकर सम्बोधित करती है और वसन्तसेना भी इस आत्मीय स्वीकृति को हर्षपूर्वक स्वीकार करती है।

वधूपद की प्राप्ति

मृच्छकटिक का समापन वसन्तसेना के सामाजिक पुनर्स्थापन के साथ होता है। राजा आर्यक उसकी उदात्तता, सत्यनिष्ठा और चारुदत्त के प्रति उसके निष्कलुष प्रेम से प्रसन्न होकर उसे वधू की उपाधि प्रदान करते हैं। यह केवल व्यक्तिगत सम्मान नहीं, बल्कि समाज द्वारा एक गणिका को प्रतिष्ठित गृहिणी के रूप में स्वीकार किए जाने की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक घोषणा है। यथा –

'आर्ये वसन्तसेने परितुष्टो राजा भवतीं वधुशब्देनानुगृह्नाति।'

(मृच्छकटिक. पृ. ५७२)

शर्विलक के कथन से स्पष्ट होता है कि राजकीय मान्यता के साथ वसन्तसेना को विधिवत् वधू का सम्मान प्राप्त होता है। इस प्रकार शूद्रक यह सिद्ध करते हैं कि मनुष्य की वास्तविक पहचान उसके

जन्म, व्यवसाय अथवा सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके चरित्र, आचरण, त्याग, करुणा और नैतिक मूल्यों से होती है। वसन्तसेना का वधूपद प्राप्त करना सामाजिक रूढ़ियों पर मानवीय मूल्यों की विजय का प्रतीक है।

मृच्छकटिक में त्रिविध नारी - चरित्र का मूल्यांकन

मृच्छकटिक में उज्जयिनी के तत्कालीन समाज की विभिन्न सामाजिक श्रेणियों की स्त्रियों का यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है। इनमें मुख्यतः कुलवधू, गणिका तथा दासी - परम्परा से सम्बद्ध स्त्रियों का उल्लेख मिलता है। इन तीनों वर्गों की सामाजिक स्थिति, अधिकार, मर्यादा तथा जीवन - दृष्टि एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी नाटककार ने प्रत्येक के मानवीय पक्ष को समान संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। गणिकाएँ आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, शिक्षित तथा कला-कौशल में निपुण थीं। वे भव्य प्रासादों में निवास करती थीं और सामाजिक जीवन में उनका विशिष्ट स्थान था। दूसरी ओर कुलवधू को गृहस्थ जीवन में सम्मान, वैधानिक पत्नी का अधिकार तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। इनके अतिरिक्त मदनिका जैसी दासी-वर्ग की स्त्रियाँ भी सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग थीं, जिन्हें इच्छानुसार मुक्त कर विवाह करने का अवसर प्राप्त हो सकता था। इस प्रकार शूद्रक ने तत्कालीन समाज में स्त्री - जीवन की विविध अवस्थाओं का अत्यन्त यथार्थ एवं संतुलित चित्रण प्रस्तुत किया है।

गणिका वसन्तसेना की सामाजिक स्वीकृति

मृच्छकटिक का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष वसन्तसेना का चरित्र - विकास है। सामान्यतः गणिका - वृत्ति को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था। किन्तु शूद्रक यह स्पष्ट करते हैं कि कोई भी स्त्री जन्म से पतिता नहीं होती और न ही वह स्वेच्छा से ऐसा जीवन चुनती है। सामाजिक, आर्थिक तथा परिस्थितिजन्य विवशताएँ उसे इस मार्ग पर ले आती हैं। इसलिए किसी स्त्री का मूल्यांकन केवल उसके व्यवसाय के आधार पर करना अन्यायपूर्ण है। वसन्तसेना के चरित्र में प्रेम, करुणा, दया, उदारता, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा तथा मानवीय गरिमा के सभी श्रेष्ठ गुण विद्यमान हैं। यही कारण है कि वह समाज के पूर्वाग्रहों को पराजित कर सम्मान और स्वीकृति प्राप्त करती है। शूद्रक उसके माध्यम से यह संदेश देते हैं कि गणिकाएँ भी समाज का अभिन्न अंग हैं तथा उन्हें भी सम्मान, प्रेम और समान सामाजिक अवसर प्राप्त होने चाहिए। प्रकरण में मदनिका का ब्राह्मण शर्विलक से विवाह तथा वसन्तसेना का वधूपद प्राप्त करना इस सामाजिक परिवर्तन का सशक्त प्रतीक है। इन घटनाओं के माध्यम से शूद्रक अपने समय की रूढ़ सामाजिक धारणाओं को चुनौती देते हैं और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हैं।

उपसंहार

शूद्रक ने मृच्छकटिक में वसन्तसेना के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि गणिका का जीवन केवल भोग - विलास या अर्थोपार्जन तक सीमित नहीं है। उसके भीतर भी प्रेम, करुणा, त्याग, धर्मनिष्ठा, संवेदनशीलता और आत्मसम्मान जैसी महान मानवीय भावनाएँ विद्यमान हैं। वसन्तसेना एक साथ अनेक रूपों में हमारे सामने उपस्थित होती है — कर्तव्यनिष्ठ सहचरी, उदार दात्री, वात्सल्यमयी माता, कलाप्रिय एवं विदुषी नारी, धर्मपरायणा स्त्री तथा समर्पित प्रेमिका। इन सभी रूपों में उसका व्यक्तित्व गरिमामय और प्रेरणादायक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि मृच्छकटिक में वसन्तसेना का चरित्र सामाजिक हाशियाकरण से सम्मानजनक समावेशन की सफल यात्रा का प्रतिनिधित्व करता है। शूद्रक ने उसके माध्यम से यह प्रतिपादित किया है कि मनुष्य की वास्तविक प्रतिष्ठा उसके जन्म अथवा व्यवसाय से नहीं, बल्कि उसके सद्गुणों, नैतिक आचरण तथा मानवीय मूल्यों से निर्धारित होती है। इसी कारण वसन्तसेना भारतीय संस्कृत नाट्यपरम्परा की सर्वाधिक उदात्त एवं स्मरणीय नायिकाओं में परिगणित होती है।

संदर्भ – सूची

1. काले, एम. आर. (सं.), शूद्रक, *मृच्छकटिकम्*, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९६२।
2. दे,अविनाश चन्द्र एवं सिद्धान्त, शुभेन्दुकुमार (सं.), *मृच्छकटिकम्*, संस्कृत पुस्तक भण्डार, कोलकाता, १४१३।
3. दास, देवकुमार, *संस्कृत साहित्य का इतिहास*, संस्कृत पुस्तक भण्डार, कोलकाता, १४०९।
4. बंद्योपाध्याय, धीरेंद्रनाथ, *संस्कृत साहित्य का इतिहास*, पश्चिम बंग राज्य पुस्तक पर्षद, कोलकाता, १९८८।
5. बंद्योपाध्याय, उदय चन्द्र एवं बंद्योपाध्याय, अनीता (सं.), *मृच्छकटिकम्*, संस्कृत बुक डिपो, कोलकाता, २००७।
6. विश्वास, अनुशीला, *मृच्छकटिकः एक तात्त्विक विश्लेषण*, अतिसन्दर्भ, ढाका विश्वविद्यालय, वंग्लादेश, २०१९।
7. भट्टाचार्य, सुकुमारी, *मृच्छकटिकम्*, साहित्य एकादेमी, २०११।
8. प्रामाणिक, इन्द्रजीत, *International Journal of Applied Research,* ISSN Print: 2394 – 7500, ISSN Online: 2394 – 5869, IJAR 2020: 6 (10): 937 – 940।